International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(I), April - June, 2024, pp. 55-60

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालय पलायन (नालंदा बिहार के गिरियक प्रखंड के संदर्भ में)

प्रियंका कुमारी*
प्रोफेसर (डॉ.) हरिश कंसल**

प्रस्तावना

सरकारी विद्यालय वैसे विद्यालय को कहते हैं, जिन्हें सरकार द्वारा चलाया जाता है। ऐसा विद्यालय सभी विद्यार्थियों को एक समान शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देता है। इसके नियम समाज के सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा बनाया जाता है। इसके सभी कर्मचारियों को सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।

विद्यार्थियों का पलायन शब्द अंग्रेजी शब्द ड्रॉप आउट का हिंदी रूपांतरण है, वैसे बच्चे जो विद्यालय छोड़ देते हैं अर्थात पढ़ाई से मुख मोड़ लेते हैं। ऐसी स्थिति को विद्यार्थियों का पलायन कहते हैं। यह समस्या गांव और शहरों दोनों में पाई जाती है। इस समस्या को रोकने के लिए अनेक तरह की योजनाएं चलाई जा रही है। इसके लिए पोशाक योजना, छात्रवृत्ति योजना, मध्यान भोजन योजना, निशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना इत्यादि कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं।

नालंदा जिला का गठन 9 नवंबर 1972 ईस्वी में किया गया। यह बिहार राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। नालंदा का अर्थ होता है ज्ञान देने वाला। पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहा, जिसमें वेद, व्याकरण, भौतिकी, चिकित्सा, तर्क आदि की शिक्षा दी जाती थी। देश–विदेश के छात्र इस विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए लालायित रहते थे।

प्रसिद्ध ऐतिहासिक राज्य बिहार भारत के उत्तर पूर्वी भाग के मध्य में स्थित है। बिहार राज्य का गठन 22 मार्च 1912 ई को हुआ था। यह जनसंख्या की दृष्टि से तीसरा तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का 12वां राज्य है। बिहार का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। बिहार की पावन भूमि पर सम्राट अशोक, अजातशत्रु, बिंबिसार, आचार्य चाणक्य, महान गणितज्ञ तथा खगोल विद आर्यभट्ट, महावीर स्वामी, गुरु गोविंद सिंह आदि का जन्म हुआ था।

विद्यालय पलायन के कारण

व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है । शिक्षा केवल शिक्षकों द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान या छात्रों द्वारा लिया जाने वाला ज्ञान नहीं है। यह छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करता है। शिक्षा का स्थान जीवन में सर्वोपरि है। हर बच्चे तक शिक्षा पहुंचे इसके लिए सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अनेक काम किया जा रहे हैं। उदाहरण स्वरुप 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा, निशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना, मध्यान भोजन योजना, छात्रवृत्ति योजना आदि इसके बावजूद विद्यालयों से विद्यार्थियों का पलायन जारी है। इसके कारण निम्नलिखित है –

- जागरूकता की कमी आज भी कई समाज ऐसे हैं, जिन्हें शिक्षा का महत्व नहीं पता है। जिन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक करने में हम आज भी असमर्थ हैं। ऐसे लोगों को लगता है कि शिक्षा से उनके बच्चों का कोई फायदा नहीं होने वाला है। शिक्षा से उनके जीवन में कोई बदलाव नहीं आएगा।

---

* शोधार्थी, शिक्षा विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशक, समाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

- पारिवारिक स्थिति यहां बहुत सारे परिवार ऐसे हैं, जिनमें पति–पत्नी दोनों काम करने घर से बाहर जाते हैं। ऐसे में घर की रखवाली, छोटे भाई बहनों की देखभाल आदि समस्याएं विद्यालय जाने वाले बच्चों के सामने आ जाती है। जिसके कारण विद्यालय से बच्चों का पलायन बढ़ जाता है।
- आर्थिक स्थिति बहुत सारे बच्चों के घरों में पैसों की काफी तंगी होती है। जिसके कारण विद्यालय जाने वाले बच्चों को बाल मजदूरी भी करनी पड़ती है। कुछ बच्चों को माता–पिता के काम में हाथ बताना पड़ता है। उदाहरण स्वरूप खेती के काम में माता–पिता की मदद करना, घर के काम में मदद करना, पशुपालन के काम में माता–पिता की मदद करना, पैसों के लिए गाड़ी की सफाई, जूता साफ करना, होटल में काम करना, ईंट भट्टों पर काम करना, कचरा बीनना आदि काम करते हैं।
- गलत संगत कुछ बच्चे गलत संगत में पढ़ने के कारण भी विद्यालय छोड़ देते हैं। घर से विद्यालय के लिए निकलते हैं, पर बीच में अपने दोस्तों के साथ कहीं और चले जाते हैं तथा गलत आदत का शिकार हो जाते हैं। जैसे धूम्रपान करना, नशा करना आदि।
- विद्यालय में बौद्धिक सुविधाओं की कमी होना कुछ बजे विद्यालय में शौचालय की कमी, पीने के पानी की कमी, बिजली की कमी, खेल के मैदान की कमी आदि भौतिक सुविधाओं के अभाव के कारण भी विद्यालय छोड़ देते हैं। विकलांग बच्चे रैंप की कमी के कारण भी विद्यालय छोड़ देते हैं।
- अभिभावक की रुचि का अभाव कुछ परिवार बच्चों की पढ़ाई के प्रति रुचि नहीं दिखाते हैं, उनके बच्चे घर में पढ़ने बैठते हैं या नहीं क्या पढ़ रहे हैं, इस बात पर ध्यान ही नहीं देते हैं। जिसके कारण पढ़ाई के प्रति बच्चों की रुचि धीरे–धीरे कम हो जाती है।
- घर से विद्यालय की दूरी कुछ बच्चों का घर विद्यालय से दूर होने के कारण भी विद्यालय से विद्यार्थियों का पलायन बढ़ा है।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी संभव है, जब विद्यालय में सभी विषयों के शिक्षक हों। आज भी विद्यालय में सभी विषय के पर्याप्त शिक्षक नहीं है। जो शिक्षक है सरकार उन्हें भी अन्य कार्यों में लगा देती है जैसे जनगणना करवाना, सर्वे करवाना, चुनाव करवाना, बालपंजी तैयार करवाना आदि।

साहित्य पुनरावलोकन

- स्टेनले (2014) द्वारा " कक्षा नवमी के विद्यार्थियों की गणित विषय की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा समस्या समाधान योग्यता पर अध्ययन विषय पर अध्ययन किया ।

अध्ययन से पाया गया कि छात्र व छात्राओं का उपलब्धि अभिप्रेरणा व समस्या समाधान योग्यता का स्तर सामान था। (इ) विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता निम्न थी। (ब) नवी कक्षा के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा औसत से उच्च थी। (क) प्राइवेट स्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा व समस्या समाधान योग्यता अधिक थी।

- आहूजा (2002) द्वारा "परोपकारिता एवं संवेगात्मक बुद्धि के संबंध में पर्यावरण शिक्षा में उपलब्धि पर स्व अधिगम प्रमाप की प्रभावित का अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया गया।

शोध अध्ययन में पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि एक निरर्थक कारक के रूप में अभिनय सीखने के संदर्भ में पर्यावरणीय शिक्षा की अवधारणाओं से संबंधित है। (इ) शिक्षक आव्यूह एवं संवेगात्मक बुद्धि की अंतक्रिया में सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया। (ब) शिक्षक आव्यूह, परोपकारिता एवं संवेगात्मक बुद्धि की अंतक्रिया में सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया।

- पानीगृही (2005) द्वारा "हाई स्कूल विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्तर तथा बुद्धि के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन में यह पाया गया की बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक संबंध नहीं है।

- राठौर तथा मिश्रा (2015) में "शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर समायोजन तथा सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन में पाया गया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक थी व उनका समायोजन भी उच्च था।

- सुरेंद्र कुमार (2004) प्राथमिक स्तर पर नियमित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से पाया गया कि वैसे शिक्षामित्र शिक्षक जिन्होंने बीटीसी प्रशिक्षण प्राप्त किया है। 99 प्रतिशत विश वस्तता अंतराल पर उनके अनुदेशन की तैयारी की योग्यता, कक्षा कक्ष संप्रेषण की दक्षता, उनके उपयोग की दक्षता, शैक्षिक सामग्री का विकास व निर्माण आदि में दक्ष पाए गए।

- अनीता राठौर (2004) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समन्वय व शैक्षिक उपलब्धि का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन विषय पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन से पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का समन्वय और विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई, उनमें समन्वय क्षमता भी अधिक थी तथा जिन विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि कम पाई गई, उन में समन्वय क्षमता भी कम थी।

- अरूप मजूमदार (2013) ने "प्राथमिक स्कूल के बच्चों के बीच में स्कूल छोड़ने के कारण क्या है? भारत बांग्लादेश सीमा क्षेत्र पर एक अध्ययन विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से यह पाया गया कि छात्रों तथा छात्राओं दोनों के स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण उनकी आर्थिक बाधाए थीं। उनके अभिभावकों का शैक्षिक स्तर भी कम था। वे लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान देने ध्यान देते थे। छात्राओं की पढ़ाई छोड़ने का मुख्य कारण घरेलू काम था तथा विद्यार्थियों के पढ़ाई छोड़ने का मुख्य कारण अभिभावकों की अनिच्छा भी थी।

- गौरी पांडे (2012) ने "अलीगढ़ जनपद (उत्तर प्रदेश) के ग्रामीण क्षेत्रों के लड़कों तथा लड़कियों (6 से 14 वर्ष) में शालात्याग का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से पाया गया की लड़कियों की अपेक्षा लड़कों ने कम शालात्याग किया था। अधिक संख्या में शालात्याग करने वाले बच्चे हिंदू धर्म के थे। जिसमें से सबसे कम सामान्य जाति से, उससे ज्यादा पिछड़ी जाति के तथा उससे ज्यादा अनुसूचित जाति के थे। ज्यादातर शालात्याग करने वाले बच्चों के माता–पिता मजदूरी का कार्य करते थे। बहुत बच्चों ने अभिभावकों की अरुचि के कारण विद्यालय छोड़ दिया था। बहुत सारी लड़कियों ने घरेलू कामकाज के कारण पढ़ाई छोड़ दिया था। ज्यादा बच्चे प्राथमिक कक्षा में ही शालात्याग कर चुके थे।

- आर गोविंद राजू एवं एस वेंकटेशन (2010) ने "ग्रामीण परिवेश में स्कूल ड्रॉप आउट पर एक अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया।

इस अध्ययन से पाया गया की स्कूल छोड़ने के लगभग साठ कारण उभर कर सामने आए। उनके अनुभवजन्य डोमेन के आधार पर वर्गीकरण द्वारा सार्थक अंतर वाले तीन प्रमुख समूह अध्यापकों के लिए व्यवसाय तथा शैक्षिक स्तर, अभिभावकों के सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा शिक्षा और ड्रॉप आउट विद्यार्थियों के लिंग का पता चला। निष्कर्ष रूप में उत्तरदाताओं के तीन समूहों के बीच ड्रॉप आउट हेतु आपसी दोषारोपण करना पाया गया।

- जोसेफ गेरार्ड अम्यूसो (2007) ने नियमित कक्षाओं से विद्यार्थियों के अनुपस्थिति की घटना और मिसिसिपी गणित पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की उपलब्धि" विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से निष्कर्ष पाया गया कि सातवीं कक्षा के निलंबित किए गए तथा निलंबित नहीं किए गए विद्यार्थियों की मिसिसिपी गणित पाठ्यक्रम में उपलब्धि में सार्थक सांख्यिकीय अंतर पाया गया तथा सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों की मिसिसिपी गणित पाठ्यक्रम में उपलब्धि तथा उनके नियमित कक्षा से अनुपस्थित रहने से दिनों के मध्य कोई सांख्यिकीय सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

- रजनीश कुमार (2010) ने "मध्याहन भोजन योजना की स्वीकार्यता तथा हरिद्वार जिले के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के नामांकन पर इसके प्रभाव का अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया।

इस अध्ययन से पाया गया कि इस योजना से शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हो रही है। इस योजना से नामांकन तो बड़ा है, साथ ही विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति पर भी नियंत्रण हो पाया है। इस योजना से बच्चों को संतुलित आहार तथा पौष्टिकता से परिपूर्ण भोजन प्राप्त हो रहा है।

- खिग्धा रानी बरुआ तथा उत्पला गोस्वामी (2012) ने "प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया।

इस अध्ययन से पाया गया कि बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ने का कारण है घर का काम, अभिभावक की पढ़ाई के प्रति अरुचि, कमजोर आर्थिक स्थिति तथा छात्रों की पढ़ाई में अरुचि।

- मुरलीधर सिंह (2013) ने "चित्रकूट जनपद में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से पाया गया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में विद्यालय छोड़ने की दर अधिक थी। सामाजिक आर्थिक स्थिति में निम्न वर्ग के समूह वाले तथा आरक्षित जाति के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की दर अधिक पाई गई।

- सतविंदर पाल कौर (2013) ने "ग्रामीण विद्यार्थियों में स्कूल ड्रॉप आउटः कारणों में अंतर की जांच" विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से पाया गया की स्कूल ड्रॉप आउट का मुख्य कारण गरीबी, घरेलू काम, अभिभावक की अरुचि, घर का प्रतिकूल वातावरण, विद्यालय में संसाधन की कमी, छोटे भाई–बहन की देखभाल करना आदि था।

- आशिक हुसैन (2011) ने "पाकिस्तान में प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणः एक अनुभवजन्य अध्ययन" विषय पर अध्ययन किया।

अध्ययन से पाया गया कि आमतौर पर प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विद्यालय पलायन के उत्तरदायी कारणों को दो भागों में बांटा गया है। एक भाग विद्यालय के बाहर की तथा दूसरा भाग विद्यालय के अंदर के कारणों का था। विद्यालय के बाहर के कारणों में माता–पिता की गरीबी, अभिभावकों द्वारा प्रेरणा काअभाव, शिक्षा के मूल्य को नहीं समझना, माता–पिता का पलायन तथा विद्यालय की घर से अधिक दूरी थी। जबकि विद्यालय के अंदर के कारणों में विद्यालय में भौतिक सुविधाओं की कमी, विद्यार्थियों की समझ से परे दोषपूर्ण पाठ्य पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम था।

शोध अंतर की पहचान

प्रस्तावित शोध कार्य सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालय पलायन (नालंदा बिहार के गिरियक प्रखंड के संदर्भ में) अभी तक गिरियक प्रखंड में नहीं किया गया है।

विद्यालय पलायन के कारणों में आर्थिक कठिनाइयां, लैंगिक असमानता, क्षेत्रीय असमानता, शैक्षिक बुनियादी संरचना, सरकारी नीतियां, माता–पिता की भागीदारी, कौशल विकास कार्यक्रम, बाल विवाह तथा गलत संगत, पर अभी तक वर्तमान समय में काम नहीं हुआ है।

विद्यालय पलायन की जिम्मेदारी काफी हद तक शिक्षा के पाठ्यक्रम पर भी जाता है। नौकरी नहीं मिलने पर यह शैक्षिक पाठ्यक्रम बेकार साबित होते हैं। यह नौकरी नहीं मिलने पर अन्य कार्यों के लिए उपयोगी नहीं साबित होते हैं।

उद्देश्य

- विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ने के कारणों का सामाजिक आर्थिक स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ने के कारणों का जाति वर्ग के आधार पर अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ने के कारणों का लिंग के आधार पर अध्ययन करना।

- विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ने के कारणों का विद्यालय की स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ने के कारणों का विद्यालय के प्रकार के आधार पर अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तावित शोध प्रबंध सर्वेक्षण पर आधारित होगा। जिसके अंतर्गत विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों का उनके घर पर जाकर उनका तथा उनके अभिभावकों का साक्षात्कार लिया जाएगा।

शोध प्रबंध में आंकड़ों के संग्रहण हेतु प्रश्नावली अनुसूची, साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि का निर्माण किया जाएगा।

आंकड़ों के संकलन तथा विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया जाएगा।

परिकल्पनाएं

- विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में लिंग के आधार पर पर्याप्त अंतर है।
- विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में सामाजिक आर्थिक स्थिति के आधार पर पर्याप्त अंतर है।
- विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में जाति वर्ग के आधार पर कोई अंतर नहीं है।
- विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में विद्यालय की स्थिति सुविधा संपन्न या सुविधा रहित के आधार पर कोई अंतर नहीं है।
- विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में विद्यालय से घर की दूरी के आधार पर कोई अंतर नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मजूमदार अरूप 2013 "प्राथमिक स्कूल के बच्चों के बीच स्कूल छोड़ने के कारण क्या है। भारत बांग्लादेश सीमा क्षेत्र पर एक अध्ययन" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इन्नोवेटिव रिसर्च एंड स्टडीज।
2. यादव रामराज 2011 "प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में अव्यय एवं अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन (जनपद संत रविदास नगर भदोही के विशेष संदर्भ में)" शिक्षा शास्त्र उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद।
3. पांडे गोरी 2012 "अलीगढ़ जनपद उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लड़कों तथा लड़कियों 6 से 14 वर्ष में साला त्याग का तुलनात्मक अध्ययन" गृह विज्ञान में पी.एच.डी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़।
4. कुमार रजनीश 2010 "मध्याह्न भोजन योजना की स्वीकार्यता तथा हरिद्वार जिले के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों के नामांकन पर इसके प्रभाव का अध्ययन" शोध समीक्षा और मूल्यांकन।
5. बरुआ स्निग्धारानी तथा गोस्वामी उत्पला 2012 "प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन "इंटरनेशनल जनरल आफ फॉर्म साइंसेज 20121
6. सिंह मुरलीधर 2013 "चित्रकूट जनपद में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन" एशियन जर्नल ऑफ़ एज्युकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी जुलाई 20131
7. कौर सतविंदर पाल 2013 "ग्रामीण विद्यार्थियों में स्कूल ड्रॉप आउट कारणों में अंतर की जांच रिसर्च स्कॉलरली जनरल फॉर इंटूडिसीप्लिनरी स्टडीज।
8. अग्निहोत्री, रवीन्द्र (1990), भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, नयी दिल्लीः रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोसल साइंसेज, दरियागंज।
9. अवस्थी, रीता और पाण्डे, उमाशंकन (2008), "प्राथमिक शिक्षा की सार्वभौमिकता में विशेषकर बालिका शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन", परिप्रेक्ष्य, वर्ष 15, अंक 1. अप्रैल 2008, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय।

10. कुमार, रजनीश (2010), "मध्याहन भोजन योजना की स्वीकार्यता तथा हरिद्वार जिले के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नामांकन पर इसके प्रभाव का अध्ययन", शोथ समीक्षा और मूल्यांकन, इश्यू 20, सितम्बर 20101

11. कुमार, सन्त कुमार मिश्र (2012). भारत में शिक्षा व्यवस्था, मेरठः आर, लाल बुक डिपो।

12. गुप्ता, एस. पी. (2001), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

13. पाण्डेय, रामशकल (1979). शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

14. पाठक, पी. डी. (1993), शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

15. पाटक, पी. डी. (2014), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

16. मीतल, मुन्ना लाल (1965). भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, मुजफ्फरनगरः अजन्ता प्रकाशन।

17. मदान, पूनम (2014). भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएँ. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स। महरोत्रा, ममता एवं शर्मा, महेश (2011). शिक्षा का अयिकार, दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।

18. यादव, रामराज (2011), "प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन, (जनपद सन्त रविदास नगर, भदोही के विशेष सन्दर्भ में)". पी. एच.डी. शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित) शिक्षा शास्त्र, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

19. रमन बिहारी लाल (2002). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें. मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन्स

20. राय, पारसनाथ (1993), "सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण", अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पब्लिसर्श ।

21. राम, प्रेमशंकर और राम, सुरेन्द्र (2008), "प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य एवं दृष्टिहीन बच्चों के शैक्षिक अपव्यय संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन", परिप्रेक्ष्य, वर्ष 15, अंक 1. अप्रैल 2008, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय।

22. रामशकल पाण्डेय एवं करुणा शंकर मिश्र (2001). भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

23. शर्मा, आर.ए. शिक्षा अनुसंधान, मेरठः आर. के. रेड बुक डिपो.

24. सिंह, मुरलीधर (2013), "चित्रकूट जनपद में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन", Asian Journal of Educational Research & Technology- Vol- 3 (2), July 2013 सिडाना, अशोक कुमार (2008). भारतीय शिक्षा की समस्यायें एवं नई प्रवृत्तियाँ. जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

25. सारस्वत, मालती एवं बाजपेयी, एल.बी. (2000). शिक्षा की समस्यायें एवं प्रयोग. इलाहाबादः आलोक प्रकाशन।

26. अमुसो, जोसेफ जेरार्ड (2007). "नियमित कक्षा सेटिंग से छात्र अनुपस्थिति की घटना और सातवीं कक्षा के गणित मासिसिपी पाठ्यचर्या परीक्षण पर छात्र उपलब्धि", डॉक्टर ऑफ एजुकेशन की डिग्री के लिए दक्षिणी मिसिसिपी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत एक शोध प्रबंध (प्रकाशित) ।

❖◆❖